Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Impact Factor (IIJIF): 5.454 | Vol. 8, Issue 1 | May. 2020 - October 2020 | pp. 105-109

पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा : वैचारिक पड़ताल

साक्षी शर्मा

शोधार्थी

राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर (राजस्थान)

शोध सारांश

चित्रा मुद्गल जी द्वारा लिखित किन्नर विमर्श पर केन्द्रित ''पोस्ट बॉक्स न. 203 नाला सोपारा'' उपन्यास साहित्य अकादमी द्वारा सम्मानित एक मर्मस्पर्शी उपन्यास है। यह उपन्यास तृतीय लिंगी समुदाय के लिए समाज द्वारा बनाई दूरियों को रेखांकित करता है। विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली उर्फ दीकरा, शारीरिक संरचना में और बच्चों से अलग हैं, लैंगिक विकलांगता चौदह वर्ष की उम्र में उसे अपने परिवार से अलग कर देती है। विनोद का अपनी प्राण प्रिय बा से संवाद करने हेतु पत्रों का सहारा लेना, समाज की बनाई घृणित परम्पराओं का नतीजा है। चित्रा मुद्गल जी की लेखनी ने उपन्यास द्वारा किन्नर समुदाय के साथ हो रहे अन्यायों को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि किन्नर समुदाय की प्रतिभाओं को समाज किस प्रकार दफन कर रहा है। एक इंसान को इंसान समझे जाने की लड़ाई कहाँ तक जायज है। विधायक के लिए विनोद केवल एक मोहरा है, विनोद के जरिए वे अपना वोट बैंक हासिल करना चाहते है। उपन्यास में विनोद का अपना मत रखना, सभ्य समाज को उद्वेलित करता है। वे तुरंत उसके लिंग दोष पर तीखा तंज कसते हैं। उपन्यास के अंत में राजनीति के दरिंदों द्वारा विनोद की जीवन लीला समाप्त कर दी जाती है। उपन्यास का कथानक हमें लैंगिक रूप से विकलांग, हाशिए खड़े समुदाय पर दृष्टि डालने के लिए विवश करता है।

संकेताक्षर : *किन्नर, विनोद, बा, पत्र, पूनम जोशी, हिजड़ा, समाज, अस्तित्व, परंपराएं, हत्या, माफीनामा*

प्रस्तावना

सृष्टि की उत्पत्ति में मानव का अवतरण एक आश्चर्य जनक एवं अचम्भित करने वाली घटना थी क्योंकि मनुष्य ने अपने बौद्धिक बल एवं शारीरिक शक्ति से अल्पकाल में ही समस्त जैविक प्रजातियों को पीछे ढकेल दिया। सभ्यता एवं संस्कृति कला विज्ञान का इस तरह विकास किया कि आज ब्रह्मांड के अधिपत्य को चुनौती दे डाली। मानव जाति में इन नर - नारी की उत्पत्ति के साथ एक और लिंग की उत्पत्ति हुई, जो कि आज तक अपने उचित अस्तित्व की तलाश में है। यह आज भी सामाजिक उत्पीड़न से ग्रस्त हैं। वर्ग भेद एवं समाज की कुत्सित मानसिकताओं से संतप्त है और विधि द्वारा संरक्षित पद्धति से अभिशप्त है जो सदियों से अपने सीने में ज्वालामुखी की धधक छुपाए हुए हैं, पीड़ा का बर्फीला पर्वत जमाए हुए हैं। समाज क्रूर है, निष्ठुर है, हास्य ढूंढता है इस वर्ग के क्रियाकलापों में, स्वयं पर इठलाता है, मनोरंजन का आनंद लेता है इनकी गूंजती तालियों की थापों में यह वर्ग तृतीय लिंगी समुदाय है जिन्हें किन्नर, हिजड़ा, छक्का, खुसरा, पवैय्या, जोगप्पा, युनक, कोज्जा या मादा आदि कई नामों से सभ्य समाज में संबोधित किया जाता है। इसी समुदाय पर लिखे गए उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा किन्नर जीवन के उतार चढ़ाव और अनेक विसंगतियों को मार्मिक दृष्टि से पाठक के समक्ष उपस्थित करता है।

अधूरी देह क्यों मुझको बनाया,
बता ईश्वर तुझे ये क्या सुहाया,
किसी का प्यार हूं न वास्ता हूं,
न तो मंजिल हूं, मै न रास्ता हूं,
की अनुभव पूर्णता का हो न पाया,
अजब यह खेल रह-रह धूप छाया,
अधूरी देह....

-महेंद्र भीष्म[1]

इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों में हाशिए पर खड़े विभिन्न वर्गों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जा रहा है। लेखकगण नवीन विषयों से पाठकों को अवगत कराने प्रयासरत हैं। हिंदी साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान पा चुकी चित्रा मुद्गल जी एक प्रतिभाशाली लेखनी की धनी है। चित्रा जी के आवां, एक जमीन अपनी, गिलिगडु उपन्यास अपनी कथाभूमि में बेहद विशिष्ट हैं, जिन्हें पुरस्कृत किया जा चुका है। चित्रा जी का नवीन उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में हाशिए पर खड़े तृतीय लिंगी समाज का वास्तविक चित्र उकेरता है। यह अपन्यास 2016 में प्रकाशित हुआ, पाठक वर्ग को अपने मार्मिक पक्ष से द्रवित कर देने वाले इस उपन्यास को वर्ष 2018 में साहित्य अकादमी सम्मान से सम्मानित भी किया गया। वरिष्ठ लेखिका ममता कालिया जी ने भी चित्रा मुद्गल जी के इस उपन्यास पर कूट किया है कि इस मुश्किल कथानक को चित्रा मुद्गल ने बड़े सधे और सिद्ध हाथों से उठाया है और अंत तक इसका निर्वाह भी किया है। पूरी कथा मां को संबोधित पत्रों की शक्ल में है, जो कहीं भी बोझिल या बेस्वाद नहीं होती। उपन्यास हमें जननांग दोषी समुदाय पर गहरी नजर डालने को बाध्य करता है।[2]

यह एक सोचनीय विषय है कि समाज का एक हिस्सा जो अपने अस्तित्व की लड़ाई में आज भी उचित स्थान नहीं पा सका है और उन पर लिखे गए इस उपन्यास को हिन्दी साहित्य अकादमी का सम्मान प्राप्त हुआ। यह इंगित करता है कि समाज में बदलाव आने लगा है पर इतना नहीं को समाज इन्हें गले लगा ले। इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक में नीरजा माधव का 'यमदीप' उपन्यास वर्ष 2004 में सामने आया जो कि तृतीय लिंगी समाज पर लिखा गया प्रथम उपन्यास है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि 2004 से पूर्व हिंदी साहित्य या अन्य साहित्य में भी इस वर्ग से संबंधित कोई खास रचना नहीं लिखी गई, जिन रचनाओं में इन्हें कोई स्थान दिया भी गया तो वे हँसी के पात्र बनकर रह गए। पौराणिक साहित्य में ऐसा नहीं था। शिखंडी, बृहनल्ला आदि कई मिथकों में इन्हें समाज में स्थान प्राप्त था। साहित्य में सन् 2004 में 'यमदीप' उपन्यास से किन्नर विमर्श पर चर्चा आरंभ होने लगी जो कि एक उल्लेखनीय उपन्यास है। वर्ष 2016 में चित्रा मुद्गल जी का 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' उपन्यास ने इस विषय को ख्याति प्राप्त कराई और प्रत्येक पाठक को हाशिए पर खड़े तृतीय लिंगी समुदाय के विषय में पढ़ने के लिए आकर्षित किया। यह उपन्यास अपने आप में एक विशिष्ट स्थान रखता है इस उपन्यास में एक तरफा पत्रों से संवाद से लिखा गया है। इन पत्रों के माध्यम से सामान्य परिवार में जन्मे विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली की कहानी को दिखाया गया है। गृह निष्कासन के बावजूद भी एक बालक का कागज के पन्नों के माध्यम से अपनी बा से जीवन भर जुड़ा रहना इस उपन्यास को पठनीय बना देता है। बा का हृदय कभी नहीं चाहता कि उसका दीकरा कभी उससे जुदा हो पर समाज की घृणित परंपराएं किन्नर रूप में जन्मे बालक विनोद को परिवार से अलग कर देती है। स्वयं विनोद का बड़ा भाई, उसके पिता भी यही चाहते है कि विनोद घर का सदस्य ना रहे। चौदह वर्ष का बेहद प्रतिभशाली बालक, अपनी बा का विशेष लाडला, कक्षा में अव्वल स्थान प्राप्त करने वाला बालक, बालप्रेम में ज्योत्स्ना से आकर्षित बालक, आत्मविश्वास से भरपूर बालक समाज की निम्न मानसिकता के चलते परिवार, विद्यालय, पढ़ाई, दोस्त, प्यार सबसे छिटक दिया जाता है।

यह उपन्यास विनोद नाम के एक किन्नर पर लिखी गई महत्वपूर्ण रचना है विनोद का जन्म एक गुजराती परिवार में मुंबई में होता है। विनोद में शारीरिक दोष (अविकसित यौनांग) होने के उपरांत भी उसकी बा उसे दुनिया से छुपाए रखती है, ... और छोकरो से तू अलग है यह मान लेने में ही तेरी भलाई है, ना किसी की बराबरी कर, न अपनी इस कमी की उनसे चर्चा। समाज को ऐसे लोगों की आदत नहीं है और वे आदत डालना भी नहीं चाहते।[3] बा विनोद को विद्यालय भेजती है आम बच्चों के साथ शिक्षा प्राप्त करवाती है वह अपने बच्चे को दुनिया से बचे रहने की सीख देती है। विनोद कई बार बा से प्रश्न भी करता है कि वह औरों की तरह क्यों नहीं रह सकता। यह प्रश्न पाठक के हृदय को उतना ही उद्वेलित करता है जितना की बा के हृदय को। उपन्यास में बा 14 वर्ष तक समाज से विनोद के इस लिंग दोष को प्रकट होने से बचाए रखती है। विनोद में सिर्फ शारीरिक दोष है इसके अलावा उसमें कोई भिन्न प्रकार का तौर तरीका नहीं है। विनोद अब भी समाज में रह सकता है, वह गणित में अव्वल है। उसकी मां उसे प्रख्यात गणितज्ञ शकुंतला देवी से भी मिलाना चाहती है।समय का फेर कुछ यूं बैठता है कि किन्नर गिरोह को उन पर शक पड़ जाता है। बार-बार घर आने पर वह अपने छोटे बेटे मंजुल को उन्हें दिखाती है पर वह नहीं मानते। अंततः बा परिवार व किन्नरों के दवाब के चलते अपने पुत्र को किन्नरों को सौंप देती है। उपन्यास में विनोद कई बार अपनी बा को कोसता है, उलाहना देता है। तूने मेरी बा तूने और पप्पा ने मिलकर मुझे कसाई के हाथ मासूम बकरी सा सौंप दिया।[4] यहीं से शुरू होती है विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली की कहानी, अब विनोद दिल्ली के मोहन बाबा नगर में रहता है। उपन्यास में विनोद अपनी बा को संबोधित करते हुए पत्र लिखता है। यह पत्र भी घर के पते पर नहीं भेजे जा सकते क्योंकि विनोद से कोई भी संपर्क परिवार के अन्य सदस्यों को नामंजूर है। इसी क्रम में बा उसे पोस्ट

बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा का पता देती है, जिस पर विनोद अपने पत्रों को भेज सके। संपूर्ण उपन्यास कुछ एक तरफा पत्रों के संवाद के रूप में आगे बढ़ता है। उपन्यास में पन्ने दर पन्ने मन को द्रवित कर देने जैसे कथन है। घर में सबका जन्मदिन तू धूमधाम से मनाया करती है। मेरा जन्मदिन मनाया था तूने, बा?... तू हँस रही है न! हूं ना अब भी मैं नादान! जबकि इतना बड़ा हो गया हूं। इस नरक में रहकर असली उम्र से दोगुना।[5]

पोस्ट बॉक्स न. 203 नालासोपारा उपन्यास का कथानक विनोद के पत्र दर पत्र आगे बढ़ता है। शुरुआती पत्रों में विनोद कभी अपने दिन भर के क्रियाकलापों की जानकारी बा को बताता है तो कभी अपने पप्पा, भाई, मंजुल और ज्योत्स्ना के विषय में जानना चाहता है। छोटी-छोटी बातों को यूं पत्रों में लिखना विनोद का बा के प्रति असीम प्रेम को अभिव्यक्त करता है। विनोद कभी बा को कोसने लगता है तो कभी उस पर अपना सम्पूर्ण प्यार उड़ेल देता है। ऐसा नहीं है कि वह बा को पूर्ण रूप से दोषी मानता है वह जानता है कि बा विनोद से बहुत प्रेम करती है बस उसे अपनाने के लिए परिवार से या समाज से लड़ाई लड़ने में असक्षम है।

पिता द्वारा इस सभ्य समाज में रहने के लिए अपने पुत्र को मृत घोषित कर दिया जाना, विनोद को सर्प दंश से भी अधिक जीवन भर चुभता रहता है। यहां उपन्यास में किन्नर जीवन के अस्तित्व पर भारी प्रश्न उठाता है। विनोद के पिता को किन्नर का पिता कहलाने की अपेक्षा अपने जीवित पुत्र को मृत घोषित करना अधिक सुलभ हुआ। विनोद इस बात से दुखी होकर कह उठता है, पापा की इच्छा पूरी ही ना कर दी जाए? किस्सा खत्म! कहां मरूँ? मरूँ तो कैसे मरूँ? कैसे जन्मूं यह तो नहीं चुन पाया। मौत चुन सकता हूं।[6]

जिस प्रकार लूला, लंगड़ा या अंधा बनकर सामान्य लोगों में जीवन जिया जा सकता है, उसी प्रकार लैंगिक विकलांगता होने पर समाज इन्हें स्वीकार क्यूं नहीं कर सकता। समाज से काट कर या यूं कहे की इनका अस्तित्व अस्वीकार कर समाज खुद इन्हें अपराधी बनने पर मजबूर कर देता है। उपन्यास में किन्नर मुखिया का ड्रग माफिया बन जाना इसी का उदाहरण है।

विनोद किन्नर समूह में आने पर भी उनके तौर तरीके नहीं अपनाना चाहता है इससे स्पष्ट है कि अगर किसी किन्नर को सामान्य परिवार में रखा जाए तो वह एक आम जिंदगी जी सकता है। विनोद के सपने अब भी जिंदा है वो कुछ भी करके पढ़ना चाहता है। वह अपनी आर्थिक स्थिति के लिए कार साफ करने का कार्य करता है, समूह में रहने वाले सदस्यों को पढ़ाता है। पढ़ाई ही हमारी मुक्ति का रास्ता है कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा गया है हमारे लिए।... हम महाभारत काल में तो है नहीं कि कोई चमत्कारी यक्ष स्थूलकर्ण हमें अपना पुरुष प्रदान कर 'अन्य' के अभिशाप से हमें मुक्त करा देगा।[7] विनोद की अपने सरदार से नहीं बनती क्योंकि विनोद जानता है वह उन्हें किन्नरों की इस दशा के लिए उत्तरदायी है। इस उपन्यास में बा ओर विनोद के अलावा भी महत्वपूर्ण पात्र है जो विनोद की जिंदगी को प्रभावित करते है और किन्नरों के सामाजिक सम्बन्धों में आस्था को अभिव्यक्त करते है। उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्तित्व पूनम जोशी जी का है, जो खुद एक किन्नर है और विनोद से प्रेम करती है। उसका हरसंभव ख्याल रखती है। यह प्रेम शरीर के स्तर से कहीं ऊपर जान पड़ता है। पूनम जोशी विनोद के सपनों से अवगत है वो उसे विधायक जी की से मिलवाती है ताकि उसकी पढ़ाई-लिखाई के सपने साकार रूप ले सके। विधायक जी विनोद को कम्प्यूटर कोर्स करवाते, नौकरी पर रखते हैं, उपन्यास में यह बात किन्नरों की क्षमाओं को व्यक्त करती है। विनोद कि नजर में विधायक परमात्मा से कम नहीं थे, सर में अंग्रेजों की गुलामी की बू आती है, कान पक गए नेता जी विधायक जी सर जी सुनते-सुनते।... नाम लेकर तो वह बुला नहीं सकते। मगर तुम... तुम तो बाऊजी बोलो। उस पल मैं फुरर से सीधा पप्पा के पास पहुंच गया था, बा।[8]

विनोद की काम में निपुणता से लेखिका इंगित करना चाहती है कि अगर मौका दिया जाए तो किन्नर समुदाय समाज के लिए कितना उपयोगी हो सकता है, वहीं परिवार के लिए भी पूर्ण पुरुष बड़े भाई के घर छोड़े जाने पर विनोद चाहता है वह अपनी बा की सेवा करे। मनुष्य का ध्येय केवल यौन संबंध या संतानोत्पत्ति नहीं है, इनसे कहीं बढ़कर है। एक किन्नर बाकी सभी कामों में सक्षम होता है। विधायक जी के यहां लगने लगता है कि विनोद का जीवन अब गर्त से उठने लगा है। पूनम जोशी का विनोद से मिलने आना, कमरे को व्यवस्थित करना, चाय का इंतजाम करना एक किन्नर के समर्पण भाव को व्यंजित करता है, प्यार में समर्पण को दिखाता है। तिवारी जी जो कि विधायक जी के कामों को संभालते हैं, पूनम जोशी को विधायक जी के विलायत से लोटे भतीजे के जन्मदिन की पार्टी पर नृत्य के लिए आमन्त्रित करते है। पूनम का राजीनामा उचित रकम पर तय होता है। विनोद पूनम के लिए भी एक स्वप्न देखता है, मैं तुम्हें फार्म हाउस मैं नहीं, सीरी फोर्ट में कार्यक्रम देता हुआ देखना चाहता हूं । मैं तुम्हें तालियों के समंदर में तैरते हुए देखना चाहता हूं।[9]

उपन्यास में विधायक जी के चंडीगढ़ जाते-जाते विनोद को भी साथ ले चलने का आदेश देते है। विनोद अचानक से हुए फैसले

से खास खुश नहीं होता पर विधायक जी जिसे वह बाउजी कहता है उनकी बात नहीं टाल पाता। विधायक जी का विनोद से पहले निकल जाना और चंडीगढ़ में भी उसे छोड़ पहले निकल जाना विनोद को असमंजस में डाल देता है। विनोद की ये सभी बाते पत्रों के माध्यम से ही पाठक को अवगत होती है, इस प्रकार हर बात का जिक्र विनोद अपनी बा से करता है। तिवारी जी के एक फोन, जिसमें वे विनोद को अब किन्नरों के आरक्षण के लिए खड़ा करना चाहते है, दलितों के लिए अंबेडकर पैदा हो सकते हैं तो किन्नरों के लिए विनोद क्यों नहीं पैदा हो सकता![10]

विनोद को घड़ी और मोबाइल उपहार भी दिया जाता है। विनोद अपने समुदाय की उन्नति तो चाहता है पर परिस्थितियों को समझ पाना उसके बस में नहीं है। बा का बहू की डिलीवरी में बलसाड़ व्यस्त हो जाने से पत्र और फोन दोनों में से किसी का जवाब नहीं मिल पाता है। विनोद सभा को संबोधित करता है किन्नरो में जोश जगाता है, मैं सरकार से अपील करता हूं इस सभागार में लिंग दोषी बिरादरी की घर वापसी को वह सुनिश्चित करें।[11] आरक्षण की मांग भी उठाता है। सभा में उपस्थित सभी किन्नर विनोद से प्रभावित होते हैं। अपनी मांग को लेकर आगे की कार्यवाही के लिए विनोद सभी को दिल्ली जंतर मंतर के लिए आमन्त्रित करता है। यहां उपन्यास में किन्नरों का राजनीति कदम रखना यह स्पष्ट करता है कि मौका मिले तो अपनी पारंपरिक भूमिका से बाहर आ सकते हैं।

विनोद का इस प्रकार किन्नरों में जागरण भाव का संचार का करना तिवारी जी को खास अखरता है। वे स्पष्ट शब्दों में विनोद को दुत्कारते हुए उसे एक हिजड़ा होने का एहसास करा कर नीचा दिखाते है। क्यों विनोद, सीने पर समाज सुधारक का तमगा लटकाने का शौक चर्रा आया? राजा राम मोहन राय ने बनना चाहते हो। इसीलिए हमने भेजा था तुम्हें चंडीगढ़। मनमानी करने?[12] वे किन्नर आरक्षण की मांग को चुनावी मुद्दा बनाना चाहते हैं। विनोद बस एक मोहरा सा बन जाता है। दिल्ली लौटने पर ज्ञात होता है कि पूनम जोशी हॉस्पिटल में भर्ती है। आई सी यू में एडमिट पूनम जोशी का रेप, पार्टी में विलायत से लोटे भतीजे व उसके मित्र ने बड़ी बेरहमी से किया था। विनोद का खून खोल उठता है इस बीच उस पता चलता है। पार्टी से पहले उसकी बा का फोन पूनम के आया था उनकी तबियत ठीक नहीं है। पूनम हॉस्पिटल के बेड पर लेटी विनोद के मुंबई नाला सोपारा जाने का फ्लाइट से इंतजाम करने को कहती है। तिवारी जी वहां आ कर विनोद को यही रहने के लिए बाध्य करते हैं। क्योंकि उनका चुनावी मुद्दा किन्नर आरक्षण विनोद के द्वारा ही सम्भव था। सरदार टिकट करवा कर विनोद का दिल जीत लेता है। विनोद वहां से चल देता है, यह उपन्यास का अंतिम खत यहां पर समाप्त होता है। उपन्यास के अंतिम पन्ने कथानक को पलट कर रख देते है। विनोद की बा टाइम्स ऑफ इंडिया में एक खबर प्रकाशित करवाती है कि एक स्वर्गवासी बा का माफीनामा, अपने किन्नर बेटे से घर वापसी की अपील। इस पूरे समाचार में परिवार का कबूलनामा है जो निर्दोष विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली के लिए किए गुनाहों को लेकर है। बा का ये माफीनामा समाज में एक मिसाल के तौर पर लिखा गया है। उपन्यास के अगले पृष्ठ पर एक और समाचार है जिसमें मीठी नदी में किसी किन्नर कि फूली हुई लाश प्राप्त होती है। पता चलता कि किसी आपसी रंजिश का मामला हैं और इसका सम्बन्ध किन्नर गिरोह से है। विनोद राजनीति के कुचक्रों का मोहरा बन खत्म कर दिया जाता है। उपन्यास में किन्नर विनोद की जिंदगी का सफर उठते उठते ढह जाता है।

निष्कर्ष

उपन्यास का कथानक अंत में समाज से सवाल करता है कि क्या सच में किसी किन्नर को जीने का हक है? सपने देखने का हक है? उपन्यास में बेहद प्रतिभाली विनोद जो पढ़ लिख कर देश का नाम रोशन के सकता था, मौका मिलता तो राजनीति में भी अपने समुदाय के हकों की रक्षा कर सकता था, परंतु विनोद के उठते सपनों खत्म करने के लिए विनोद को मार दिया जाता है। पूनम जोशी जो कि सुंदर नृत्यांगना है, अपना हुनर लोगों के घर बधाईयों और विधायक की पार्टी में व्यर्थ करती है। उसके बदले उससे रेप किया जाता है जो असल में शारीरिक पीड़ा से ज्यादा मानसिक स्तर पर उसे तोड़ देता है। उपन्यास में बार - बार बा.. बा.. बा.. का उच्चारण बालमन को प्रत्यक्षदर्शी कर देता है। उपन्यास में विनोद द्वारा कहा गया है कि किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने जाने का संघर्ष है।[13] उपन्यास समाज को आइना दिखाने में कामयाब रहा है। अपनी प्राण प्रिय बा से संवाद के लिए पत्रों का सहारा क्यों लिया गया। समाज द्वारा बनाए गए ये फासले तृतीय लिंगी समुदाय के साथ सरासर अन्याय को बयां करते हैं। समाज को ये स्वीकार करना होगा कि अपूर्णता में भी सौंदर्य है, प्रतिभा है, जीवन है।

संदर्भ सूची

1. सिंह, डॉ विजेंद्र प्रताप, भारतीय साहित्य एवं समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2016 ,पृ. सं. 11
2. <एचटीटीपीएसः//ब्लॉग्स डॉट नवभारत टाईम्स डॉट इण्डिया टाइम्स डॉट कॉम/एनबीटीएडिट पेज/चित्रा-मुदगल्स-पोस्ट-

बॉक्स-नं.-203-नाला-सोपारा-एक्सप्लेन्स-मिसेरी-ऑफ-यूनक्स/>
3. मुद्गल, चित्रा, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2020, पृ.सं. 10
4. उपर्युक्त, पृ.सं. 11
5. उपर्युक्त, पृ.सं. 19
6. उपर्युक्त, पृ.सं. 33
7. उपर्युक्त, पृ.सं. 110
8. उपर्युक्त, पृ.सं. 132
9. उपर्युक्त, पृ.सं. 134
10. उपर्युक्त, पृ.सं. 157
11. उपर्युक्त, पृ.सं. 186
12. उपर्युक्त, पृ.सं. 189
13. उपर्युक्त, पृ.सं. 195